पाठ 6. नानी की नाव चली

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बच्चों की कल्पनाशक्ति को विकसित करना है। बच्चे अपनी नानी माँ से बहुत प्रेम करते हैं। इस कविता में कवि बच्चा बनकर अपनी नानी की नाव के चलने की कल्पना कर रहे हैं।

कविता का सारांश

इस कविता में कवि वर्णन कर रहे हैं कि नानी की नाव जा रही है। घर से सामान निकाल-निकालकर नानी की नाव में रखे जा रहे हैं। रास्ते में एक मगरमच्छ ने नानी की नाव का पीछा किया और एक-एक करके नाव में से सारा सामान निकाल लिया। परंतु नानी को कुछ पता ही नहीं, वे तो आराम से नाव में सो रही हैं। नानी सोती ही रहीं और नानी की नाव खाली-खाली चलती रही।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व बच्चों का ध्यान पाठ की ओर दिलाने के लिए उनसे कुछ चर्चा करें। बच्चों से उनकी नानी के बारे में पूछें। उनकी नानी कहाँ रहती हैं, वे छुट्टियों में उनके घर जाते होंगे, उन्हें वहाँ कैसा लगता है आदि प्रश्नों द्वारा बच्चों का रुझान कविता की ओर दिलाएँ। कविता का सस्वर वाचन करें, बच्चों से भी करवाएँ। कविता से संबंधित प्रश्न पूछें तथा बताएँ–

- ❖ बताएँ कि नाव को नौका तथा नैया भी कहते हैं।
- ❖ पूछें, नानी की नाव में क्या-क्या सामान डाले गए थे?
- ❖ कविता में आए तुक वाले शब्द बच्चों से पूछें। एक शब्द आप स्वयं बताएँ और दूसरा शब्द बच्चों को बताने के लिए प्रेरित करें।
- ❖ मगरमच्छ पानी में रहता है। बच्चों से पानी में रहने वाले जीवों के नाम पूछें और बताएँ।
- ❖ मौखिक कौशल में दिए शब्दों का बच्चों से उच्च स्वर में उच्चारण करवाएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।